हरे–भरे वृक्षों को न काटें : आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, पानी और बिजली के दुरपयोग न करने की दी हिदायत, अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आगाज, पहला दिन पर्यावरण शुद्धि दिवस के रुप में मनाया, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, राजसमंद पालिका अध्यक्ष अब सप्ताह में एक दिन नहीं करेगी गाडी में यात्रा

केलवाः 26 सितम्बर

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि पर्यावरण को बनाए रखने की दृष्टि से हरे भरे वृक्षों को नहीं काटना चाहिए। वृक्ष अपने बेटे के समान है। वृक्ष को काटना बेटे को खोना है। तेरापंथ धर्मसंघ के 11 वें अधिशास्ता आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान सोमवार से शुरू हुए अणुव्रत सप्ताह के आगाज के अवसर पर उपस्थित श्रावक–श्राविकाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि एक ओर हम पौधों को लगाने की बात करते है और दूसरी ओर बडे होने पर इन्हें ही काटने से नहीं चूकते। यह कैसा पर्यावरण संतुलन है। जैन शास्त्रों में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि पेडों को अपने बच्चों के समान समझने की आवश्यकता है। संयम की चेतना पुष्ट हो। वर्तमान परिवेश में पर्यावरण के प्रति जागरूकता जरुरी है। हम स्वयं सतर्क रहें और दूसरों को भी इसकी प्रेरणा दें। शांतिदूत ने श्रावक समाज से पानी और बिजली के अपव्यय को रोकने का आह्वान करते हुए कहा कि कम पानी का उपयोग करके यदि स्नानादि हो सकता है तो हम व्यर्थ में पानी को नष्ट क्यों करते हैं। नल के नीचे बैठकर स्नान करने की बजाय बाल्टी में पानी लेकर यह उपक्रम किया जाता है तो पानी का अपव्यय कम होगा। नल के नीचे बैठने से पानी का दुरुपयोग होता है। इसे समझने और प्रवृति बनाने की आवश्यकता है। ऐसी ही क्रिया हम वस्त्र प्रक्षालन के दौरान करते है। जैनधर्म में पानी के सदुपयोग और संयम पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसे लेकर उन्होंने एक प्रसंग भी प्रस्तुत किया और कहा कि व्यक्ति को कभी भी घुटना नहीं चाहिए। मन में हो रही उथल–पुथल को उचित तरीके से प्रकट करने पर स्वच्छता की अनुभूति होगी। उन्होंने कहा कि जहां आवश्यकता नहीं है वहां पर हम बल्ब इत्यादि लगाकर बिजली का दुरुपयोग करते है। अक्सर यह भी देखने को मिलता है कि हम कहीं काम से जा रहे

है और कमरे की लाइट चालू अवस्था में ही छोड दी। इस प्रवृति से बचने की आवश्यकता है। हम बिजली का कम से कम उपयोग करके देश को विकास के मार्ग की ओर प्रशस्त कर सकते है। साथ ही इसके प्रकाश में आने वाले जीव–जन्तुओं के प्रति भी उदारता रख सकते है। पदार्थ और उसके उपभोग के बीच अंतर पाटने की जरूरत है। संगठन और संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि वे पांडाल अथवा आयोजन स्थल पर जितनी जरूरत है उतनी ही लाइट का उपयोग करे। जैन शास्त्रों में भी जीव हत्या न हो। इसे लेकर अहिंसा एवं संयम पर ध्यान दिया गया हैं।

अंधकार को मिटाने का दीप है अणुव्रत

आचार्यश्री ने अणुव्रत को अंधकार को मिटाने के दीप के रुप में परिभाषित करते हुए कहा कि गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी ने समाज में व्याप्त अंधेरे को दूर करने की दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन देशभर में चलाया था। अणुव्रत के माध्यम से हम अपने जीवन को संयमित और साधनामय कर सकते है। यह हमें शिष्टाचार और रहने का ढंग सिखाता है। आज इसकी समाज और व्यक्ति को महत्ती आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि साधुओं में तेरापंथ धर्मसंघ की नियमावली के प्रति जागरूकता रहनी चाहिए। साधु का जीवन साधनामय हो। नवरात्र का त्योहार सन्निकट है। इन दिनों में साधु और गृहस्थ जीवन वाले परिवार भी साधना और तपस्या करें। प्रत्याखान भी किया जा सकता है। यह समय साधना करने का समय है। अनाहार की दृष्टि से साधना होनी चाहिए। तपोधन साधु की पहचान है। इस दौरान आगम के स्वाध्याय का भी प्रयास करना चाहिए। उन्होंने साधु–साध्वियों से कहा कि इन दिनों में वे उत्तराध्यन के 10 वें अध्याय को याद करने का प्रयास करें। व्यस्तताओं के बीच समय निकालकर आगम का स्वाध्याय और अपनी चेतना में निर्मलता का विकास करें।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि आज हम पर्यावरण शुद्धि दिवस मना रहे है। इस दिवस की सार्थकता तभी सफल हो सकती है जब हम पर्यावरण संतुलन को बरकरार रखने की दिशा में समुचित प्रयास करें। इसके लिए आवश्यक है कि वाहनों का कम उपयोग किया जाए और पैदल चलने की प्रवृति को जीवन में उतारा जाए। इससे जहां वातावरण में धुंए की व्यापकता पर अंकुश लगेगा वहीं दूसरी ओर मनुष्य स्वस्थ रह सकेगा। इस अवसर पर वन मंडल उदयपुर के उपसंरक्षक एनके जैन, राजसमंद पालिका अध्यक्ष श्रीमती आशा पालीवाल, केलवा सरपंच दिग्विजयसिंह, मनोनीत पार्षद प्रदीप पालीवाल, व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, मुनि अक्षयप्रकाश, कन्या

मंडल संयोजिका किरण कोठारी ने भी विचार व्यक्त किए। मुनि भवभूति स्वामी ने अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में कहा कि केलवा में चातुर्मास होने से उनका जीवन धन्य हो गया है। अणुव्रत समिति केलवा के अध्यक्ष मुकेश डी कोठारी ने बताया कि 2 अक्टूबर तक चलने वाले अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अन्तर्गत प्रतिदिन विविध दिवस मनाए जाएंगे। इस दौरान प्रतियोगिताएं, गोष्ठियां, शिविर, नुक्कड नाटक, गीत, प्रदर्शनी, सर्वधर्म सम्मेलन आदि आयोजित होंगे। प्रवचन के बाद पाली के सांसद बद्रीराम जाखड ने आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया और एक पौधा लगाकर पर्यावरण के प्रति चेतना जगाने के लिए जन चेतना का आग्रह किया। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

एक दिन पैदल आने का संकल्प

प्रवचन के दौरान आचार्यश्री के प्रवचन से अभिभूत होकर और पर्यावरण शुद्धि दिवस से प्रेरणा लेकर राजसमंद नगर पालिका की अध्यक्ष श्रीमती आशा पालीवाल व पार्षद प्रदीप पालीवाल ने सप्ताह में एक दिन गाडी से यात्रा न करने और पालिका कार्यालय पैदल आने का संकल्प लिया। आचार्यश्री से आशीर्वाद लेकर उन्होंने कहा कि वे एक दिन किसी तरह की गाडी का उपयोग आने और जाने में नहीं करेंगे।